अथर्ववेद

काण्ड ३

सूक्त १६

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

Atharvaveda

Kaaṇḍa 3
Sookta 16

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

सारांश

इस सूक्त में ऋषि वशिष्ठ हमारा ध्यान हमारी प्रातः काल की गतिविधियों की ओर ले गए हैं। सूर्योदय से पूर्व ही आलस्य त्यागकर, शौच स्नानादि से निवृत हो हमें तुरन्त अपने धर्मानुकूल कर्तव्यों के पालन में जुट जाना चाहिए। सुबह से ही हम ईश्वर का ध्यान लगा, नम्र बन, मन में अच्छे विचार रखें। हमारे कर्मों का उद्देश्य अपने लिए और समाज के किए उत्तम धनों की प्राप्ति होना चाहिए।

पहले छः मन्त्रों में ऋषि दिन का आरम्भ प्रार्थना, स्तुति व उपासना के साथ करने का निर्देश देते हैं।

अथर्वा ऋषिः। अग्नीन्द्रादयो मन्त्रोक्ता देवताः। ४८ अक्षराणि। आर्षी जगती छन्दः। निषादः स्वरः।

प्रा॒तर॒ग्निं प्रा॒तरिन्द्रं॑ हवामहे प्रा॒तर्मि॒त्रावरु॑णा प्रा॒तर॒श्विना॑।
प्रा॒तर्भगं॑ पू॒षणं॒ ब्रह्म॑ण॒स्पतिं॑ प्रा॒तः सोम॑मु॒त रु॒द्रं ह॑वामहे ॥१॥

अथर्व ३:४:१६:१, ऋग् ७:४१:१, यजुः३४:३४

प्रा॒तः। अ॒ग्निम्। प्रा॒तः। इन्द्र॑म्। ह॒वा॒म॒हे॒। प्रा॒तः। मि॒त्रावरु॑णा। प्रा॒तः। अ॒श्विना॑॥
प्रा॒तः। भग॑म्। पू॒षण॑म्। ब्रह्मणः। पति॑म्। प्रा॒तः। सोम॑म्। उ॒त। रु॒द्रम्। ह॒वा॒म॒हे॒॥१॥

(*प्रातः*) **प्रातः समय अपने दिन का आरम्भ करते हुए हम अपने** (*भगम्*) **शौर्य व उत्तम कर्म करने के लिए** (*अग्निम्*) **पावक अग्नि,** (*इन्द्रम्*) **वर्षा,** (*मित्रा*) **प्राणदायक वायु,** (*वरुणा*) **जल,** (*अश्विना*) **सूर्य और चन्द्रमा एवम्** (*पूषणम्*) **हमारे पोषण के लिए प्रदत्त** (*सोमम्*) **वनस्पतियों की ऊर्जाओं का** (*हवामहे*) **आह्वान करते हैं। और हम** (*इति*) **उस** (*ब्रह्मणः*) **जगत के** (*पतिम्*) **स्वामी का** (*हवामहे*) **आह्वान करते हैं** (*उत*) **जो** (*रुद्रम्*) **दुःखों और दुष्टों का नाशक है।**

अथर्वा ऋषिः। भगो देवता। ४४ अक्षराणि। आर्षी त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः।

प्रा॒त॒र्जितं॒ भग॑मु॒ग्रं ह॑वामहे व॒यं पु॒त्रमदि॑ते॒र्यो वि॑ध॒र्त्ता।
आ॒ध्रश्चि॒द्यं मन्य॑मानस्तु॒रश्चि॒द्राजा॑ चि॒द्यं भगं भ॒क्षीत्याह॑॥२॥

अथर्व ३:४:१६:२, ऋग् ७:४१:२, यजुः३४:३५

प्रा॒तः॒ऽजित॑म्। भग॑म्। उ॒ग्रम्। ह॒वा॒म॒हे॒। व॒यम्। पु॒त्रम्। अदि॑तेः। यः। वि॒ऽध॒र्त्ता॥
आ॒ध्रः। चि॒त्। यम्। मन्य॑मानः। तु॒रः। चि॒त्। राजा॑। चि॒त्। यम्। भग॑म्। भ॒क्षि॒। इति॑। आह॑॥२॥

Synopsis

This composition directs our attention to our morning routine and the desirable attitude as we prepare for our day. Shedding all laziness, one should wake up before dawn and after ablutions, quickly get engaged in a righteous behavior with positive mental attitude and humility. The goal of our activities should be to earn righteous wealth that can sustain and nourish us and the society as a whole as well.

In the first six mantras the sage advises us to start our day prayerfully with virtuous thoughts.

ṛiṣhiḥ atharvaa, **devataaḥ** agneendraadayo mantroktaaḥ, **vowels** 48, **chhandaḥ** aarṣhee jagatee, **svaraḥ** niṣhaadaḥ.

1. **praataragnim praatarindraṅ havaamahe**
   praatarmitraavaruṇaa praatarashvinaa,
   praatarbhagam pooṣhaṇam brahmaṇaspatim
   praataḥ somamuta rudraṅ havaamahe. Atharva 3:4:16:1, Ṛig 7:41:1, Yajuḥ 34:34

praataḥ agnim praataḥ indram havaamahe praataḥ mitraa-varuṇaa praataḥ ashvinaa,
praataḥ bhagam pooṣhaṇam brahmaṇaḥ patim praataḥ somam uta rudram havaamahe.

(*praataḥ*) **At dawn, as we begin the day,** (*bhagam*) **for our grandeur and glory** (*havaamahe*) **we meditate and invite the energies from** (*agnim*) **the holy fire, the great purifier,** (*indram*) **the rain and thunder,** (*mitraa*) **vital air,** (*varuṇaa*) **the waters,** (*ashvinaa*) **sun and moon and the** (*somam*) **herbs, created for our** (*pooṣhaṇam*) **nourishment and vitality; and** (*havaamahe*) **we praise the** (*patim*) **Supreme Lord** (*brahmaṇaḥ*) **of the universe** (*uta*) **who is** (*rudram*) **the lord of justice and tormentor of evil and ailment**.

ṛiṣhiḥ atharvaa, **devataa** bhagaḥ, **vowels** 44, **chhandaḥ** aarṣhee triṣhṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

2. **praatarjitam bhagamugraṅ havaamahe**
   vayam putramaditeryo vidharttaa,
   aadhrashchidyam manyamaanasturashchid
   raajaa chidyam bhagam bhakṣheetyaaha. Atharva 3:4:16:2, Ṛig 7:41:2, Yajuḥ 34:35

praataḥ-jitam bhagam ugram havaamahe vayam putram aditeḥ yaḥ vi-dharttaa,
aadhraḥ chit yam manyamaanaḥ turaḥ chit raajaa chit yam bhagam bhakṣhi iti aaha.

(*प्रातः*) **प्रातः समय अपने दिन का आरम्भ करते हुए हम** (*भगम्*) **कल्याणकारी परन्तु** (*उग्रम्*) **दुष्टों को भयभीत करने वाले,** (*अदितेः*) **नाशरहित,** (*विऽधर्ता*) **ब्रह्माण्ड हो धारण करने वाले ईश्वर का** (*हवामहे*) **गुणगान करते हैं** (*जितम्*) **जिसकी न्याय व्यवस्था सदैव विजयी रहती है।** (*यः*) **उसी** (*राजा*) **प्रकाशवान ईश्वर की** (*पुत्रम्*) **सन्तान** (*वयम्*) **हम, उसे** (*आध्रः*) **सब ओर से अपने** (*चित्*) **मन में** (*मन्यमानः*) **धारण किए हुए, उसके** (*आह*) **उपदेशों का पालन कर अपने** (*चित्*) **मन को** (*यम्*) **काबू में रखते हुए,** (*तुरः*) **बिना विलम्ब** (*भगम्*) **उत्तम कर्म करते हुए** (*इति*) **उसकी** (*भक्षि*) **उपासना करें।**

अथर्वा ऋषिः। भगो देवता। ४३ अक्षराणि। निचृदार्षी त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः।

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवाददन्नः।
भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ॥३॥

अथर्व ३:४:१६:३, ऋग् ७:४१:३,यजुः ३४:३६

भग। प्रऽनेतः। भग। सत्यऽराधः। भग। इमाम्। धियम्। उत्। अव। ददत्। नः॥
भग। प्र। नः। जनय। गोभिः। अश्वैः। भग। प्र। नृऽभिः। नृऽवन्तः। स्याम ॥३॥

हे (*भग*) **सर्व ऐश्वर्य युक्त** (*प्रऽनेतः*) **गणनायक,** (*सत्यऽराधः*) **पूजनीय सत्यरूप ईश्वर!** (*नः*) **हमें** (*इमाम्*) **उत्तम** (*धियम्*) **बुद्धि** (*ददत्*) **देकर हमारी** (*उत् अव*) **रक्षा कीजिए। हे** (*भग*) **कल्याणकारी ईश्वर!** (*नः*) **हमारे लिए** (*प्र*) **सब ओर से** (*गोभिः*) **गौ** (*अश्वैः*) **अश्वादि धनों को** (*जनय*) **उत्पन्न कीजिए। जो** (*प्र*) **सबसे** (*भग*) **उत्तम मनुष्य हैं वह हमारे** (*नृऽभिः*) **नायक बनें और हम सब** (*नृऽवन्तः*) **उत्तम व्यवहार वाले** (*स्याम*) **बनें।**

अथर्वा ऋषिः। भगो देवता। ४० अक्षराणि। आर्षी पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः।

उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उतोदितौ मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम ॥४॥

अथर्व ३:४:१६:४, ऋग् ७:४१:४,यजुः ३४:३७

उत। इदानीम्। भगऽवन्तः। स्याम। उत। प्रऽपित्वे। उत। मध्ये। अह्नाम्॥
उत। उत्ऽइतौ। मघऽवन्। सूर्यस्य। वयम्। देवानाम्। सुऽमतौ। स्याम ॥४॥

(*praataḥ*) **At dawn, as we begin the day** (*vayam*) **we** (*havaamahe*) **praise God who is** (*aditeḥ*) **indestructible,** (*bhagam*) **benevolent,** (*raajaa*) **luminous,** (*ugram*) **tormentor of the evil,** (*vi-dhartaa*) **the sustainer of the Universe and** (*jitam*) **whose justice always prevails. We,** (*yaḥ*) **his** (*putram*) **children** (*bhakṣhi*) **worship** (*iti*) **him and follow his** (*aaha*) **commandments by** (*yam*) **controlling our** (*chit*) **mind, by** (*manyamaanaḥ chit*) **meditating on him from** (*aadhraḥ*) **all directions and by performing** (*bhagam*) **noble deeds** (*turaḥ*) **without any delay.**

ṛiṣhiḥ atharvaa, **devataa** bhagaḥ, **vowels** 43, **chhandaḥ** nichṛid aarṣhee triṣhṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

3. bhaga praṇetarbhaga satyaraadho
bhagemaan dhiyamudavaadadannaḥ,
bhaga pra ṇo janaya gobhirashvairbhaga
pra nṛibhirnṛivantaḥ syaama. Atharva 3:4:16:3, Ṛig 7:41:3, Yajuḥ 34:36

bhaga praṇetaḥ bhaga satya-raadhaḥ bhaga imaam dhiyam ut ava dadat naḥ,
bhaga pra ṇaḥ janaya gobhiḥ ashvaiḥ bhaga pra nṛi-bhiḥ nṛi-vantaḥ syaama.

(*bhaga*) **O Possessor of all wealth!** (*praṇetaḥ*) **O Leader of masses! O** (*raadhaḥ*) **Embodiment of** (*satya*) **Truth! Please** (*ut ava*) **protect** (*naḥ*) **us by** (*dadat*) **granting us the** (*imaam*) **best** (*dhiyam*) **intellect, thoughts and emotions. Please** (*janaya*) **produce the righteous wealth including** (*gobhiḥ*) **cows and** (*ashvaiḥ*) **horses for** (*ṇaḥ*) **us from** (*pra*) **all directions. May the** (*pra*) **best amongst us** (*nṛibhiḥ*) **lead us so that all of us** (*syaama*) **realize our** (*nṛi vantaḥ*) **best potentials!**

ṛiṣhiḥ atharvaa, **devataa** bhagaḥ, **vowels** 40, **chhandaḥ** aarṣhee paṅktiḥ, **svaraḥ** pañchamaḥ.

4. utedaaneem bhagavantaḥ syaamota
prapitva uta madhye ahnaam,
utoditau maghavantsooryasya vayan
devaanaan sumatau syaama. Atharva 3:4:16:4, Ṛig 7:41:4, Yajuḥ 34:37

uta idaaneem bhaga-vantaḥ syaama uta pra-pitve uta madhye ahnaam,
uta ut-itau magha-van sooryasya vayam devaanaam sumatau syaama.

हे (*मघऽवन्*) **जगदीश्वर!** (*सूर्यस्य*) **सूर्य के** (*उत्ऽइतौ*) **उदय का** (*इदानीम्*) **यह समय,** (*अह्नाम्*) **दिन के** (*मध्ये*) **बीच का समय** (*उत*) **और सायंकाल, सभी समय हमारे लिए** (*प्रऽपित्वे*) **उत्तम ऐश्वर्य की प्राप्ति के समय** (*स्याम*) **हों।** (*वयम्*) **हम** (*भगऽवन्तः*) **कल्याणकारी कर्म करने वाले** (*स्याम*) **हो** (*उत*) **और** (*देवानाम्*) **विद्वानों में भी** (*सुऽमतौ*) **श्रेष्ठ मती स्थिर हो।**

अथर्वा ऋषिः। भगो देवता। ४३ अक्षराणि। निचृदार्षी त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः।

भगऽएव भगवाँ अस्तु देवस्तेना वयं भगवन्तः स्याम।
तं त्वा भग सर्वऽइज्जोहवीमि स नो भग पुरऽएता भवेह ॥५॥

अथर्व ३:४:१६:५, ऋग् ७:४१:५, यजुः३४:३८

भगः। एव। भगऽवान्। अस्तु। देवः। तेन। वयम्। भगऽवन्तः। स्याम ॥
तम्। त्वा। भग। सर्वः। इत्। जोहवीमि। सः। नः। भग। पुरःऽएता। भव। इह ॥५॥

वह (*भगः*) **कल्याणकारी ऐश्वर्य युक्त ईश्वर** (*एव*) **ही** (*भगऽवान्*) **भगवान** (*अस्तु*) **है।** (*तेन*) **उसी ईश्वर का पूजन करते हुए** (*वयम्*) **हम** (*देवः*) **विद्वान व** (*भगऽवन्तः*) **ऐश्वर्यवान** (*स्याम*) **बनें। हममें से** (*तम्*) **जो** (*सर्वः*) **सदैव** (*त्वा*) **आपके** (*भग*) **ऐश्वर्य को समझ कर** (*इत्*) **उसकी** (*जोहवीमि*) **प्रशंसा करता है** (*सः*) **वह और** (*भग*) **आप ही** (*इह*) **यहाँ** (*नः*) **हमारे** (*पुरःऽएता*) **मार्गदर्शक** (*भव*) **बनें।**

अथर्वा ऋषिः। भगो देवता। ४४ अक्षराणि। आर्षी त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः।

समध्वरायोषसो नमन्त दधिक्रावेव शुचये पदाय।
अर्वाचीनं वसुविदं भगं मे रथमिवाश्वा वाजिनऽ आ वहन्तु ॥६॥

अथर्व ३:४:१६:६, ऋग् ७:४१:६, यजुः३४:३९

सम्। अध्वराय। उषसः। नमन्त। दधिक्रावाऽइव। शुचये। पदाय ॥
अर्वाचीनम्। वसुऽविदम्। भगम्। मे। रथम्ऽइव। अश्वाः। वाजिनः। आ। वहन्तु ॥६॥

(*मे*) **हम** (*उषसः*) **उषा काल से पूर्व उठ** (*शुचये*) **पवित्र होकर,** (*अश्वाः*) **घोडों से जुते** (*रथम्ऽइव*) **रथ की भांति** (*वाजिनः*) **शीघ्रता से,** (*नमन्त*) **नमन का** (*सम्*) **भाव मन में लेकर,** (*पदाय*) **उत्तम पदार्थों को पाने के लिए,** (*अध्वराय*) **हिंसारहित धार्मिक व्यवहार को** (*दधिक्रावाऽइव*) **धारण करें और** (*अर्वाचीनम्*) **नयें** (*वसु*) **धनों और** (*विदम्*) **विद्याओं को प्राप्त करते हुए** (*आ*) **सब ओर से** (*भगम्*) **ऐश्वर्य व** (*वहन्तु*) **उन्नति प्राप्त करें।**

O (*magha van*) **Supreme Lord!** (*idaaneem*) **This time of the** (*uditau*) **rising** (*sooryasya*) **Sun, the time during the** (*madhye*) **middle of the** (*ahnaam*) **day and the time near the evening, may all of these time be the time of** (*pra pitve*) **obtaining righteous wealth for us. May** (*vayam*) **we** (*syaam*) **perform** (*bhaga vantaḥ*) **noble deeds all the time** (*uta*) **and may the** (*devaanaam*) **scholars amongst us** (*syaama*) **foster** (*su*) **best** (*matau*) **intellectual ideas.**

ṛiṣhiḥ atharvaa, **devataa** bhagaḥ, **vowels** 43, **chhandaḥ** nichṛid aarṣhee triṣhṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

5. bhaga'eva bhagavaaṅ astu
devastenaa vayam bhagavantaḥ syaama,
tan tvaa bhaga sarva' ijjohaveemi
sa no bhaga pura'etaa bhaveha. Atharva 3:4:16:5, Ṛig 7:41:5, Yajuḥ 34:38

bhagaḥ eva bhagavaan astu devaḥ tena vayam bhaga-vantaḥ syaama,
tam tvaa bhaga sarvaḥ it johaveemi saḥ naḥ bhaga puraḥ-etaa bhava iha.

God, (*bhagaḥ*) **The possessor of all of the great wealth** (*astu*) **is our** (*bhagavaan*) **well wisher** (*eva*) **indeed. May** (*vayam*) **we worship** (*tena*) **that God and** (*syaama*) **become** (*vantaḥ*) **possessor of** (*devaḥ*) **great knowledge and** (*bhaga*) **wealth. Amongst us** (*tam*) **whosoever understands and** (*sarvaḥ*) **always** (*johaveemi*) **praises** (*tvaa*) **your** (*bhaga*) **wealth, may** (*saḥ*) **that person along with the** (*bhaga*) **God** (*bhava iha*) **become** (*naḥ*) **our** (*puraḥ etaa*) **guide onto the righteous path.**

ṛiṣhiḥ atharvaa, **devataa** bhagaḥ, **vowels** 44, **chhandaḥ** aarṣhee triṣhṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

6. samadhvaraayoṣhaso namanta
dadhikraaveva shuchaye padaaya,
arvaacheenam vasuvidam bhagam me
rathamivaashvaa vaajina'aa vahantu. Atharva 3:4:16:6, Ṛig 7:41:6, Yajuḥ 34:39

sam adhvaraaya uṣhasaḥ namanta dadhikraa iva shuchaye padaaya,
arvaacheenam vasu-vidam bhagam me ratham iva ashvaaḥ vaajinaḥ aa vahantu.

(*me*) **We should get up before** (*uṣhasaḥ*) **daybreak and after the** (*shuchaye*) **purification routine,** (*sam*) **with** (*namanta*) **humility and as** (*vaajinaḥ*) **swiftly** (*iva*) **as a** (*ratham*) **chariot driven by** (*ashvaaḥ*) **horses,** (*dadhikraavaa*) **get engaged** (*iva*) **in** (*adhvaraaya*) **righteous deeds for** (*padaaya*) **attaining the best wealth. May we** (*vahantu*) **attain** (*arvaacheenam*) **new** (*vasu*) **wealth,** (*vidam*) **knowledge and** (*bhagam*) **benevolence from** (*aa*) **all directions!**

सातवे मन्त्र में स्त्रियों के कल्याणकारी रूप का वर्णन है।

अथर्वा ऋषिः। उषा देवता। ४३ अक्षराणि। निचृदार्षी त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः।

अश्वा॑वती॒र्गोम॑तीर्नऽ उ॒षासो॑ वी॒रव॑ती॒: सद॑मुच्छन्तु भ॒द्राः।

घृ॒तं दुहा॑ना वि॒श्वत॒: प्रपी॑ता यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभि॒: सदा॑ नः ॥७॥

अथर्व ३:४:१६:७, ऋग् ७:४१:७, यजुः ३४:४०

अश्व॑ऽवतीः। गोऽम॑तीः। न॒:। उ॒षसः॑। वी॒रऽव॑तीः। सद॑म्। उ॒च्छ॒न्तु॒। भ॒द्राः॥

घृ॒तम्। दुहा॑नाः। वि॒श्वत॑:। प्रऽपी॑ताः। यू॒यम्। पा॒त॒। स्व॒स्तिऽभि॑:। सदा॑। न॒:॥७॥

हे (*अश्वऽवतीः*) **ऐश्वर्ययुक्त,** (*गोऽमतीः*) **करुणायुक्त,** (*उषसः*) **प्रभात किरणों के समान शोभायमान,** (*वीरऽवतीः*) **दृढ स्त्रियों!** (*विश्वतः*) **सब का** (*भद्राः*) **कल्याण और सब ओर से** (*प्रऽपीताः*) **उत्तमता लाने के लिए** (*नः*) **हमारे** (*सदम्*) **घरों को** (*घृतम्*) **पोषक पदार्थों से** (*दुहानाः*) **पूरा कर सबकी** (*पात*) **रक्षा करो।** (*यूयम्*) **तुम** (*सदा*) **सदा** (*नः*) **हम सभी के सुखों का ध्यान रख घरों में** (*स्वस्तिऽभिः*) **खुशहाली** (*उच्छन्तु*) **लाओं।**

In the seventh mantra the sage highlights the benevolent nature and importance of ladies. **ṛiṣhiḥ** atharvaa, **devataa** uṣhaaḥ, **vowels** 43, **chhandaḥ** nichṛid aarṣhee triṣhṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

7. ashvaavateergomateerna' uṣhaaso
veeravateeḥ sadamuchchhantu bhadraaḥ,
ghṛitan duhaanaa vishvataḥ prapeetaa
yooyam paata svastibhiḥ sadaa naḥ. Atharva 3:4:16:7, Ṛig 7:41:7, Yajuḥ 34:40

ashva-vateeḥ go-mateeḥ naḥ uṣhasaḥ veera-vateeḥ sadam uchchhantu bhadraaḥ,
ghṛitam duhaanaaḥ vishvataḥ pra-peetaaḥ yooyam paata svastibhiḥ sadaa naḥ.

O (*ashva-vateeḥ*) **benevolent,** (*go-mateeḥ*) **empathetic,** (*veera-vateeḥ*) **brave and** (*uṣhasaḥ*) **radiant (like morning sun) ladies! May you** (*paata*) **protect** (*naḥ*) **our** (*sadam*) **homes by** (*duhaanaaḥ*) **providing complete** (*ghṛitam*) **nourishment to everyone and lead** (*vishvataḥ*) **everyone towards** (*bhadraaḥ*) **wellness and** (*pra-peetaaḥ*) **excellence. May** (*yooyam*) **you** (*sadaa*) **always care and** (*uchchhantu*) **bring** (*svastibhiḥ*) **happiness to** (*naḥ*) **our homes.**